



## चुनावी बॉण्ड

### प्रलिस के लयः

[चुनावी बॉण्ड](#), [राजनीतक दल](#), [लोक परतनधितव अधनियम, 1951](#)

### मेन्स के लयः

चुनाव परकरया पर चुनावी बॉण्ड का परभाव, नीतयों के डज़ाइन और कार्यानवयन से उत्पन्न मुददे

## चरचा में कयों?

वर्ष 1999 में नई दल्ली में स्थापत एक भारतीय [गैर-सरकारी संगठन \(NGO\)](#) एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रफॉर्मस (ADR) की एक हालया रपॉर्ट भारत में [राजनीतक दलों](#) के लय दान के पराथमक स्रोत के रूप में [चुनावी बॉण्ड](#) द्वारा नभाई गई महत्त्वपूर्ण भूमका पर परकाश डालती है।

- वर्ष 2016-17 और 2021-22 के बीच 7 राष्ट्रीय दलों और 24 क्षेत्रीय दलों को चुनावी बॉण्ड से कुल 9,188.35 करोड रुपए की दान राशप्राप्त हुई।
  - रपॉर्ट में गुमनाम चुनावी बॉण्ड, परत्यक्ष कॉरपोरेट दान, सांसदों/वधायकों के योगदान, बैठकों, मोर्चों और पार्टी इकायों द्वारा संग्रह से प्राप्त दान का वश्लेषण कया गया।

## ADR रपॉर्ट के मुख्य तथ्यः

- दान और धन स्रोतों का वश्लेषण:
  - चुनावी बॉण्ड से सबसे अधिक दान, कुल 3,438.8237 करोड रुपए, आम चुनाव के वर्ष 2019-20 में प्राप्त हुआ।
  - वर्ष 2021-22, जसमें 11 वधानसभा चुनाव हुए, में चुनावी बॉण्ड के माध्यम से 2,664.2725 करोड रुपए का दान मला।
  - वश्लेषण कयि गए 31 राजनीतक दलों द्वारा प्राप्त 16,437.635 करोड रुपए के कुल दान में से 55.90% चुनावी बॉण्ड से, 28.07% कॉरपोरेट क्षेत्र से और 16.03% अन्य स्रोतों से प्राप्त हुए हैं।
- राष्ट्रीय दल:
  - वतित वर्ष 2017-18 और वतित वर्ष 2021-22 के बीच राष्ट्रीय दलों ने चुनावी बॉण्ड दान में 743% की वृद्धि देखी गई।
  - इसके वपिरीत इसी अवधा के दौरान राष्ट्रीय दलों के कॉरपोरेट दान में केवल 48% की वृद्धि हुई।
- क्षेत्रीय दल और चुनावी बॉण्ड योगदान:
  - क्षेत्रीय दलों को भी अपने चंदे का एक बड़ा हसिसा चुनावी बॉण्ड से प्राप्त हुआ।
- चुनावी बॉण्ड का सत्ता-पक्षपाती दान:
  - सत्ता में रहने वाली पार्टी के रूप में भाजपा को राष्ट्रीय राजनीतक दलों में सबसे अधिक दान मलता है। भाजपा के कुल दान का 52% से अधिक हसिसा चुनावी बॉण्ड से प्राप्त हुआ, जसकी राश 5,271.9751 करोड रुपए थी।
  - कॉन्ग्रेस ने 952.2955 करोड रुपए (कुल दान का 61.54%) के साथ दूसरा सबसे बड़ा चुनावी बॉण्ड दान हासल कया, इसके बाद तृणमूल कॉन्ग्रेस 767.8876 करोड रुपए (93.27%) के साथ दूसरे स्थान पर रही।

## चुनावी बॉण्डः

- परचयः
  - चुनावी बॉण्ड परणाली को वर्ष 2017 में एक वतित वधियक के माध्यम से पेश कया गया था और इसे वर्ष 2018 में लागू कया गया था।
  - वे दाता की गुमनामी बनाए रखते हुए पंजीकृत राजनीतक दलों को दान देने के लय व्यक्तयों और संस्थाओं हेतु एक साधन के रूप में काम करते हैं।
- वश्लेषताएँ:
  - [भारतीय स्टेट बैंक \(SBI\)](#) 1,000 रुपए, 10,000 रुपए, 1 लाख रुपए, 10 लाख रुपए तथा 1 करोड रुपए मूल्यवर्ग में बॉण्ड जारी करता

है।

- धारक की मांग पर देय और ब्याज मुक्त।
- भारतीय नागरिकों या भारत में स्थापित संस्थाओं द्वारा कर्य योग्य।
- व्यक्तिगत रूप से या अन्य व्यक्तियों के साथ संयुक्त रूप से कर्य योग्य।
- जारी होने की तारीख से 15 दिनों के लिये वैध।

■ अधिकृत जारीकर्ता:

- भारतीय स्टेट बैंक (SBI) अधिकृत जारीकर्ता है।
- चुनावी बॉण्ड नामित SBI शाखाओं के माध्यम से जारी किये जाते हैं।

■ राजनीतिक दलों की पात्रता:

- केवल वे राजनीतिक दल जो लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 29ए के तहत पंजीकृत हैं, जिन्होंने पछिले आम चुनाव में लोकसभा या विधानसभा के लिये डाले गए वोटों में से कम-से-कम 1% वोट हासिल किये हों, वे ही चुनावी बॉण्ड हासिल करने के पात्र हैं।

■ कर्य एवं नकदीकरण:

- चुनावी बॉण्ड डिजिटल या चेक के माध्यम से कर्य किये जा सकते हैं।
- जबकि नकदीकरण केवल राजनीतिक दल के अधिकृत बैंक खाते के माध्यम से।

■ पारदर्शिता और जवाबदेही:

- दलों को भारत निर्वाचन आयोग (ECI) के साथ अपने बैंक खाते का खुलासा करना होगा।
- पारदर्शिता सुनिश्चित करते हुए दान बैंकगि चैनलों के माध्यम से किया जाता है।
- राजनीतिक दल प्राप्त धनराशिके उपयोग के बारे में बताने के लिये बाध्य हैं।

■ लाभ:

- राजनीतिक दलों की फंडिंग में पारदर्शिता बढ़ी।
- दान राशिके उपयोग को बताने की जवाबदेही।
- नकद लेन-देन को हतोत्साहित करना।
- दान दाता गुमनामी का संरक्षण।

■ चुनौतियाँ:

- चुनावी बॉण्ड राजनीतिक दलों को दी जाने वाली दान राशि है जो दानदाताओं और प्राप्तकर्ताओं की पहचान को गुमनाम रखती है। वेजाने के अधिकार से समझौता कर सकते हैं, जो संविधान के अनुच्छेद 19 के अंतर्गत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का हिस्सा है।
- दान दाता के डेटा तक सरकारी पहुँच के चलते गुमनामी से समझौता किया जा सकता है। इसका तात्पर्य यह है कि सत्ता में मौजूद सरकार इस जानकारी का लाभ उठा सकती है जो स्वतंत्र और नष्पक्ष चुनावों को बाधित कर सकता है।
- अनधिकृत दान की संभावना का उल्लंघन।
- घोर पूंजीवाद और काले धन के उपयोग का खतरा।
- घोर पूंजीवाद एक आर्थिक प्रणाली है जो व्यापारियों और सरकारी अधिकारियों के बीच घनषिट, पारस्परिक रूप से लाभप्रद संबंधों की वशिषता है।
- कॉर्पोरेट संस्थाओं के लिये पारदर्शिता और दान सीमा के संबंध में खामियाँ।
  - कंपनी अधिनियम 2013 के अनुसार, कोई कंपनी तभी राजनीतिक योगदान दे सकती है जब उसका पछिले तीन वित्तीय वर्षों का शुद्ध औसत लाभ 7.5% हो। इस धारा के हटने से शेल कंपनियों के ज़रिये राजनीतिक फंडिंग में काले धन के योगदान को लेकर चिंता बढ़ गई है।

## आगे की राह

- चुनावी बॉण्ड योजना में पारदर्शिता बढ़ाने के उपाय लागू करना।
- राजनीतिक दलों के लिये स्पष्टीकरण संबंधी सख्त नियम लागू करना और भारत निर्वाचन आयोग को किसी भी प्रकार के दान की जाँच करने तथा बॉण्ड एवं व्यय दोनों के संबंध में अवलोकन करने का प्रावधान किया जाना।
- संभावित दुरुपयोग, दान सीमा के उल्लंघन और क्रोनी पूंजीवाद तथा काले धन के प्रवाह जैसे जोखिमों को रोकने के लिये चुनावी बॉण्ड में खामियों की पहचान करके उसका हल निकालना।
- उभरती चिंताओं को दूर करने, बदलते परिदृश्यों के अनुकूल ढलने और अधिक समावेशी निर्णय लेने की प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिये न्यायिक जाँच, आवधिक समीक्षा तथा सार्वजनिक भागीदारी के माध्यम से चुनावी बॉण्ड योजना की समयबद्ध निगरानी करना।

## स्रोत: द हिंदू